बूढ़ा सुल्तान

फिराक गोरखपुरी

एक किसान के पास एक वफादार कुत्ता था। उसका नाम सुल्तान था। उसने बहुत दिनों तक सुल्तान की खिदमत की। लेकिन अब वो बहुत बूढ़ा हो गया था। उसके सारे दाँत गिर चुके थे और वो मुँह से कोई चीज़ नहीं उठा सकता था।

एक दिन किसान और उसकी बीबी घर के बाहर खड़े हुए थे। किसान ने कहा, "कल मैं सुल्तान को गोली मार दूँगा। अब वो एकदम बूढ़ा हो गया है और हमारे किसी भी काम का नहीं रह गया।" बीबी को कुत्ते से बहुत प्यार था। वो बोली, "उसने बरसों हमारी खिदमत की है और हमारे साथ हमेशा वफादार रहा है। मेरा ख्याल है के इससे कोई काम लिए बगैर भी हमें इसे खिलाना चाहिए।"

अपनी बीबी की इस बात पर किसान झुँझला गया और गुस्से में बोला, "क्या बकती हो? तुम्हें ज़रा भी अक्ल नहीं। इसके मुँह में एक दाँत तक तो है नहीं और न ही अब कोई चोर इससे डरता है। जो चाहता है बेखटके घर में घुस आता है और बगैर किसी झिझक के जो कुछ भी हाथ आ गया उसे लेकर रफूचक्कर हो जाता है। अगर इसने हमारी खिदमत की है तो हमने भी इसे दोनों वक्त खाना दिया है।"

बेचारा कुत्ता करीब ही धूप में पड़ा ये बातें सुन रहा था। जब उसने सुना के कल मेरा आखिरी दिन है तो वो बहुत घबराया। कुत्ते का एक भेड़िया दोस्त था जो पास ही एक जंगल में रहता था। शाम हुई तो कुत्ता चुपके से वहाँ से खिसक गया और जंगल में पहुँचकर भेड़िए को सारा किस्सा कह सुनाया। अपनी बात कहते हुए कुत्ता बुरी तरह रो-रोकर हिचकियाँ लेता जा रहा था। उसकी यह हालत देखकर भेड़िए ने उसे ढाढस देते हुए कहा, "चचा जान! ज़रा हिम्मत से काम लो। मैं तुम्हें इस मुसीबत से ज़रूर बचाऊँगा। कल सवेरे तुम्हारा मालिक और उसकी बीबी खेत में घास सुखाने जाएँगे। काम के दौरान दोनों अपने बच्चे को किसी झाड़ी में लिटा देंगे। फिर तुम्हें बच्चे की हिफाज़त के लिए बिठा देंगे। मैं ठीक उसी वक्त जंगल से निकलकर बच्चे को उठा ले जाऊँगा। तुम बड़ी तेज़ी से मेरा पीछा करना। मैं बच्चे को गिरा दूँगा और तुम उसे उठाकर उसके माँ-बाप के पास ले जाना। वो समझेंगे कि तुमने ही अपनी कोशिश से बच्चे की जान बचाई है। तब वो तुमसे खुश होंगे और फिर तुमसे कुछ भी न कहेंगे, बल्कि तुम्हारा एहसान मानेंगे और तुम्हें कोई तकलीफ भी नहीं देंगे।"

जब कुत्ते ने भेड़िए की ये तरकीब सुनी तो बहुत खुश हुआ। प्रोग्राम के मुताबिक सारा काम किया गया। जब बाप ने भेड़िए को अपना बच्चा ले जाते हुए देखा तो बुरी तरह चीखने लगा। बूढ़ा सुल्तान बड़ी तेज़ी से भेड़िए का पीछा कर रहा था। आखिर एक जगह भेड़िए ने बच्चे को छोड़ दिया और दुम दबाकर इस तरह भागा जैसे कुत्ते से डर गया हो। बस फिर क्या था? कुत्ते ने झट-से लपककर बच्चे को उठा लिया और उसे लिए हुए अपने मालिक की तरफ चला। किसान की खुशी की हद न रही। उसने प्यार से सुल्तान की कमर पर एक थपकी दी और कहा, "सुल्तान! तेरा एक बाल भी बाका नहीं हो सकता। अब तू ज़िन्दगी भर मेरे साथ रहेगा और दोनों वक्त तुझे पेट भर खाना मिलेगा।"

इसके बाद किसान ने अपनी बीबी को घर भेजा और कहा, "सुल्तान के लिए रोटी और सालन लाओ ताके बेचारे को चबाने की ज़रूरत न पड़े और मेरे बिस्तर से एक नर्म तकिया भी लेती आना जिससे सुल्तान थोड़ी देर आराम से सो सके।"

अब तो सुल्तान जो कुछ और जितना कुछ चाहता मज़े से खाता।

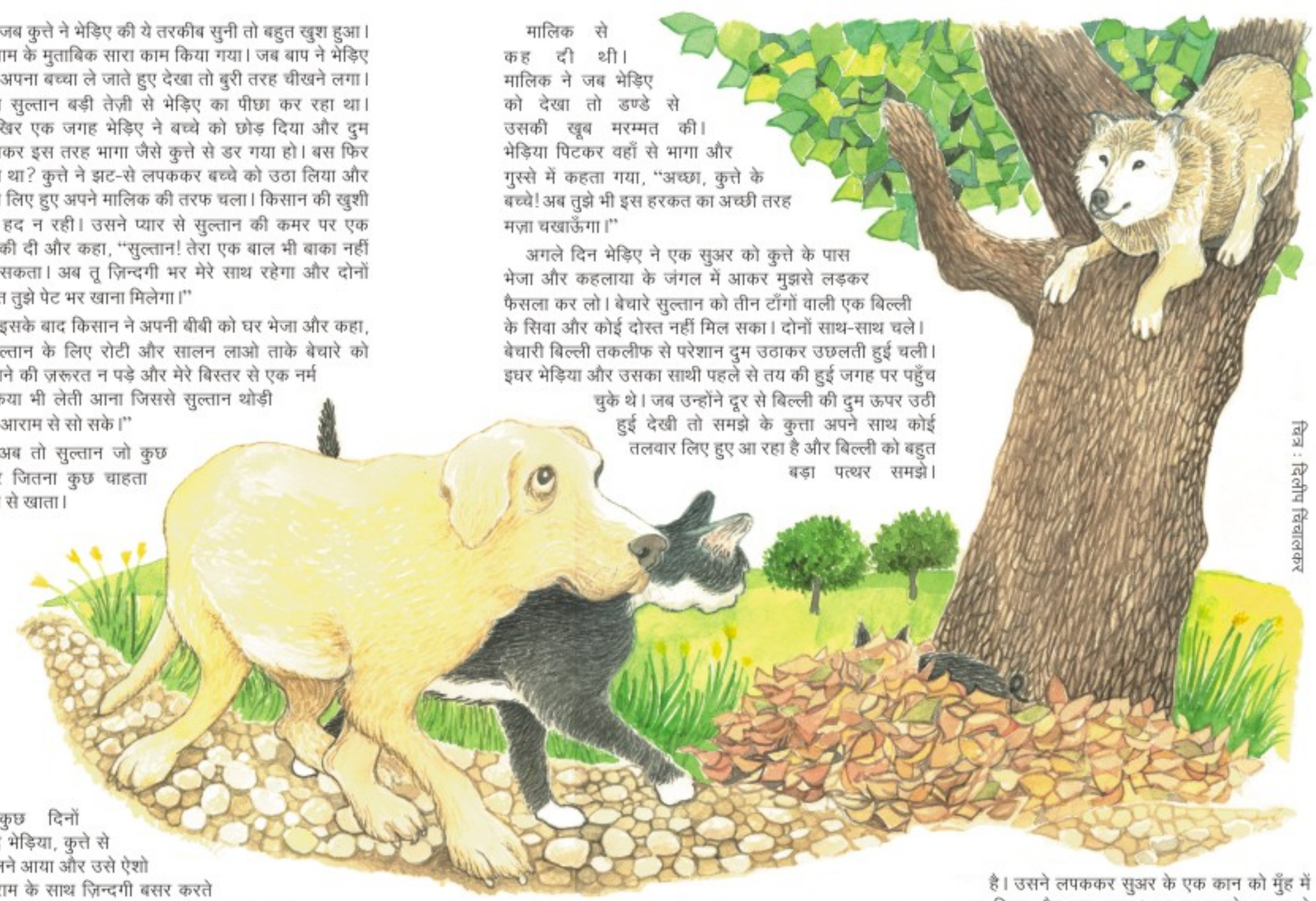

कुछ दिनों बाद भेड़िया, कुत्ते से मिलने आया और उसे ऐशो आराम के साथ ज़िन्दगी बसर करते देखकर बहुत खुश हुआ और कुत्ते को मुबारकबाद दी। इधर-उधर की चन्द बातों के बाद उसने कुत्ते से कहा, "चचा जान! अगर मैं तुम्हारे मालिक की एक भेड़ निकाल ले जाऊँ तो तुम ज़रा उधर से आँखें फेर लेना।"

कुत्ते ने फौरन जवाब दिया, "तुम यह बात अपने दिमाग से निकाल दो। मेरे मालिक को मुझ पर पूरा भरोसा है। मैं उसे धोखा नहीं दे सकता।"

भेड़िए ने समझा के कुत्ता मज़ाक कर रहा है। वो रात को चुपके से किसान के घर में घुस गया। कुत्ते ने भेड़िए की बात मालिक से कह दी थी। मालिक ने जब भेड़िए को देखा तो डण्डे से उसकी खूब मरम्मत की। भेड़िया पिटकर वहाँ से भागा और गुस्से में कहता गया, "अच्छा, कुत्ते के बच्चे! अब तुझे भी इस हरकत का अच्छी तरह मज़ा चखाऊँगा।"

अगले दिन भेड़िए ने एक सुअर को कुत्ते के पास भेजा और कहलाया के जंगल में आकर मुझसे लड़कर फैसला कर लो। बेचारे सुल्तान को तीन टाँगों वाली एक बिल्ली के सिवा और कोई दोस्त नहीं मिल सका। दोनों साथ-साथ चले। बेचारी बिल्ली तकलीफ से परेशान दुम उठाकर उछलती हुई चली। इधर भेड़िया और उसका साथी पहले से तय की हुई जगह पर पहुँच चुके थे। जब उन्होंने दूर से बिल्ली की दुम ऊपर उठी हुई देखी तो समझे के कुत्ता अपने साथ कोई तलवार लिए हुए आ रहा है और बिल्ली को बहुत बड़ा पत्थर समझे।

भेड़िया और सुअर दोनों यह देखकर बहुत घबराए। सुअर, पास ही पड़े हुए सूखे पत्तों के एक ढेर में छुप गया और भेड़िया एक पेड़ पर चढ़ गया।

जब कुत्ता और बिल्ली दोनों उस जगह पहुँचे तो उन्हें सख्त ताज्जुब हुआ क्योंकि वहाँ कोई भी नहीं था। सुअर पत्तों में अच्छी तरह नहीं छुप सका था। उसके कान बाहर निकले रह गए थे। बिल्ली बहुत गौर से सोच रही थी कि आखिर मामला क्या है। इतने में सुअर ने अपना कान हिलाया तो बिल्ली समझ बैठी के कोई चूहा है। उसने लपककर सुअर के एक कान को मुँह में भर लिया और चबा डाला। इस पर उसके हलक से एक दर्दनाक चीख निकली और वो पत्तों से निकलकर भाग खड़ा हुआ। भागते-भागते चीखकर बोला, "मैंने कुछ नहीं किया। कुसूरवार तो पेड़ पर बैठा हुआ है।"

यह सुनकर कुत्ते और बिल्ली ने नज़र ऊपर उठाई तो भेड़िया दिखाई दिया। भेड़िया अपनी बुज़दिली पर बहुत शर्मिन्दा हुआ और बहुत पछताया। पेड़ से उतरकर उसने कुत्ते से माफी माँगी और दोनों में फिर से दोस्ती हो गई।

उर्दू से अनुवादः अनवारे इस्लाम

चित्र : दिलीप चिंचालकर